

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 28, यिर्मयाह 30-33, पुनर्स्थापना के चरण, भाग 2

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए कह रहे हैं। यह सत्र 28 है, यिर्मयाह 30-33 से पुनर्स्थापना के चरण।

हम इस्राएल और उससे आगे के लोगों के लिए यिर्मयाह के पुनर्स्थापना के संदेश को देखना जारी रखते हैं, बस वह उस समय के लोगों और यहाँ तक कि इस्राएल के लोगों से क्या कह रहा था।

उद्धार के इतिहास के कार्यान्वयन के लिए यिर्मयाह के संदेश के क्या निहितार्थ हैं? हम नए नियम के प्रकाश में यिर्मयाह के संदेश को कैसे समझते हैं? आज परमेश्वर कलीसिया में क्या कर रहा है? ये कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें हम दूसरे सत्र में पुनःस्थापना के चरणों के बारे में बात करते हुए तलाशना जारी रखेंगे। हमने पिछले सत्र में यह विचार देखा कि भविष्यवक्ताओं में दिए गए राज्य के वादे ऐसे वादे हैं जिनका अनुभव अभी किया जा रहा है, लेकिन फिर भी वे ऐसे वादे भी हैं जो किसी अर्थ में अवास्तविक हैं और अभी तक पूरे नहीं हुए हैं। भविष्यवक्ताओं के पास इस बारे में चार बुनियादी विचार थे कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के लिए इस भविष्य की पुनःस्थापना में क्या करने जा रहा था।

पहला, भूमि पर वापसी होने वाली थी।

दूसरा, शहरों का पुनर्निर्माण होने वाला था, खास तौर पर यरूशलेम और मंदिर का पुनर्निर्माण।

तीसरा, लोगों पर शासन करने के लिए एक नया दाऊद होने वाला था।

और चौथा, परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दी जाने वाली आशीषें राष्ट्रों तक विस्तारित होंगी। इसलिए, जैसे-जैसे हम नए नियम में आते हैं, वे बातें मसीह में पूरी हो रही हैं। हम पूर्णता के उस चरण पर पहुँच गए हैं जहाँ परमेश्वर का राज्य आ गया है, लेकिन फिर भी, भले ही राज्य का उद्घाटन हो गया हो, यह अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है।

हमने अपने पिछले सत्र में बहाली के तीन चरणों के बारे में बात की थी। बहाली का पहला चरण निर्वासन से वापसी थी जो तब हुआ जब साइरस द्वारा आदेश जारी करने के बाद लोग वापस देश में आए। साइरस और फारसियों ने 538 में बेबीलोनियों को हराया।

इसके कुछ समय बाद, कुसू ने यह आदेश जारी किया कि यहूदी यरूशलेम वापस जा सकते हैं। वे मंदिर का पुनर्निर्माण कर सकते हैं। वे प्रभु की आराधना कर सकते हैं।

वे अपने देश में रह सकते थे। यिर्मयाह ने जो भविष्यवाणी की थी, उसकी शुरुआत यहीं से हुई। यिर्मयाह ने कहा था कि 70 साल में, प्रभु बाबुल से निर्वासितों को वापस ले आएगा।

हालाँकि, उस पुनर्स्थापना का दूसरा चरण यीशु के पहले आगमन के साथ होता है। जब हम पुराने नियम में भविष्यवाणी के युग के अंत में आते हैं, और फिर अंतर-नियम अवधि से होते हुए नए नियम के युग में पहुँचते हैं, तो हम देखते हैं कि इस्राएल के लोगों के लिए निर्वासन की परिस्थितियाँ अभी भी मौजूद थीं। वे अभी भी उत्पीड़न के अधीन थे।

वे अभी भी विदेशियों के दासत्व में थे। वे अभी भी अपने पाप के और भी अधिक कठोर दासत्व में थे। और इसलिए, यीशु अपने पहले आगमन में उन वादों को पूरा करने के लिए आते हैं जो भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल की पुनर्स्थापना और उनके निर्वासन से लौटने के बारे में किए थे।

आज हम विश्वासियों के रूप में जिस नई वाचा का आनंद लेते हैं, उसका वर्तमान पहलू कूस और यीशु की मृत्यु के द्वारा लाया गया है। यिर्मयाह एक नई वाचा की बात करता है। वह हमें यिर्मयाह अध्याय 31 में यह भविष्यवाणी देता है।

उस नई वाचा की पूर्ति यीशु की मृत्यु के माध्यम से प्रभावी होती है। याद रखें कि जब परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा स्थापित की थी, तो पुरानी वाचा बलिदान और लोगों पर खून छिड़कने के द्वारा स्थापित की गई थी। एक मृत्यु थी जिसने उस पुरानी वाचा को प्रभावी बनाया।

एक मृत्यु भी है जो नई वाचा को प्रभावी बनाती है। और दो प्राथमिक चीजें थीं जो हमारे लिए प्रदान की गई थीं। नई वाचा की आशीषों के दो प्राथमिक पहलू हैं जो मसीह की मृत्यु के कारण हमें दिए गए हैं।

नंबर एक, हमारे पास पापों की मौलिक क्षमा है जिसका वादा किया गया था, कि प्रभु अब हमारे पापों को याद नहीं रखेंगे क्योंकि उसके लिए एक सिद्ध बलिदान दिया गया है। हमारे पास आध्यात्मिक सक्षमता और आध्यात्मिक सशक्तीकरण भी है जो नए नियम से आता है क्योंकि परमेश्वर हमारे हृदयों पर अपना नियम लिखता है। और जब हम यिर्मयाह 31 के वादे को पुराने नियम में यहजेकेल 36 जैसी अन्य भविष्यवाणियों के साथ रखते हैं, तो हम समझते हैं कि हृदयों पर व्यवस्था का लेखन, आध्यात्मिक सक्षमता परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलने से आती है।

अंतिम भोज की रात, जैसा कि हमने पिछले सत्र में इस अंश को पढ़ा, लूका अध्याय 22, श्लोक 30, यीशु शिष्यों से कहते हैं, यह प्याला जो तुम्हारे लिए उंडेला गया है, मेरे लहू में नई वाचा है। इसलिए जैसे मूसा के समय में इस्राएल के साथ पुरानी वाचा को स्थापित करने वाला लहू था, वैसे ही लहू है, और उससे कहीं अधिक वजन और कहीं अधिक मूल्य का बलिदान है जो नई वाचा को भी प्रभावी बनाता है। यह विशेष रूप से एक विचार है, नई वाचा का यह नया पहलू, कि कैसे यह सब यीशु की मृत्यु के द्वारा प्रभावी बनाया गया है।

यह एक ऐसा विचार है जो इब्रानियों की पुस्तक में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। और इब्रानियों की पुस्तक यीशु के बारे में सिखाने जा रही है। वह हमारा आदर्श महायाजक है।

उसने हमारे पापों के लिए केवल पशु बलि और पशु रक्त ही नहीं चढ़ाया है। उसने एक अधिक परिपूर्ण बलिदान चढ़ाया है। उसने केवल सांसारिक निवासस्थान या सांसारिक मंदिर में सेवा नहीं की है जो स्वर्गीय मंदिर की केवल एक छाया मात्र था।

अपने बलिदान के द्वारा, वह वास्तव में स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंच गया है। उन्होंने एक सिद्ध महायाजक के रूप में एक सिद्ध बलिदान प्रदान किया है। उस सिद्ध बलिदान के परिणामस्वरूप, उसने हमारे लिए परमेश्वर के साथ एक नई वाचा का संबंध स्थापित किया और मध्यस्थता की, जो उस पुरानी वाचा से काफी बेहतर है जो लेवियों, पशु बलि, सांसारिक तम्बू और फिर यरूशलेम में मंदिर से जुड़ी थी। .

तो, यीशु ने एक परिपूर्ण बलिदान की पेशकश की है। वह एक आदर्श महायाजक हैं। और इसलिए इब्रानियों अध्याय 8 श्लोक 7 में यह कहा गया है, क्योंकि यदि वह पहली वाचा दोषरहित होती, तो दूसरी वाचा की आशा करने का कोई अवसर न होता।

क्योंकि जब वह कहता है तो वह उनमें दोष पाता है, और फिर इब्रानियों अध्याय 8 श्लोक 8 से 12 की पुस्तक हमें यिर्मयाह 31 श्लोक 31 से 34 का एक उद्धरण देती है। वास्तव में, यह पुराने नियम के किसी भी भाग का सबसे लंबा उद्धरण है नया नियम. तो, एक अंश जो प्रारंभिक चर्च के लिए स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण था, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के लिए भी स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण था।

यिर्मयाह ने इस्राएल के लोगों से जो वादा किया था वही आज हम चर्च के रूप में अनुभव करते हैं। वे आशीर्वाद प्रभावी हो गए हैं। दो नई वाचाएँ नहीं हैं।

ईश्वर के दो अलग-अलग लोग नहीं हैं। हम यीशु के कार्य के कारण उस नई वाचा के आशीर्वाद का आनंद लेते हैं जिसका वादा परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से किया था। और इब्रानियों अध्याय 8 में यिर्मयाह 31 से यह लंबा उद्धरण है जो इस बात को, मुझे लगता है, एकदम स्पष्ट कर देता है।

ठीक है, आप सीधे तौर पर यिर्मयाह द्वारा इस्राएल के लोगों से किए गए वादे को उससे जोड़ सकते हैं जो आज यीशु मसीह में विश्वास करने वाले हमारे पास है। ऐसा क्यों संभव है? यह यीशु के सिद्ध बलिदान के कारण है। इब्रानियों अध्याय 10 आयत 10 से 14 उसी विचार पर वापस जाने वाले हैं।

और यहाँ यह लिखा है। यह कहता है, और उस इच्छा से, हम एक बार और हमेशा के लिए यीशु मसीह के शरीर की भेंट के माध्यम से पवित्र हो गए हैं। पुराने नियम के बलिदानों के बारे में क्या सच था? उन्हें बार-बार चढ़ाया जाना था।

प्रायश्चित का दिन और बलिदान, याजक और लोगों दोनों के लिए पापबलि, वार्षिक आधार पर चढ़ाए जाने थे। और अगर वह वार्षिक बलिदान नहीं किया जाता, तो कोई प्रायश्चित नहीं होता। लोगों को तब तक परमेश्वर की उपस्थिति में रहने की अनुमति नहीं दी जाती जब तक कि उस पाप का बार-बार निपटारा न किया जाए।

इसलिए, यीशु ने एक श्रेष्ठ बलिदान चढ़ाया क्योंकि उसने इसे केवल एक बार ही चढ़ाया था। इब्रानियों का कहना है, और हर पुजारी प्रतिदिन अपनी सेवा में खड़ा होता है, और बार-बार एक ही बलिदान चढ़ाता है, जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकता। मेरा मतलब है, पुराने नियम में प्रायश्चित था, लेकिन वास्तविक अर्थ में, जानवरों की बलि पाप के मुद्दे को पूरी तरह से हल नहीं कर सकती थी।

वे उस आमूल-चूल क्षमा को पूरी तरह से प्रभावित नहीं कर सके जिसका नई वाचा में वादा किया गया था। वे उस आध्यात्मिक सक्षमता को नहीं ला सके जो मसीह की मृत्यु के रूप में हमारे दिलों में ईश्वर के प्रेम को लाने के लिए आती थी। यह पवित्र आत्मा का उपहार लाता है।

यीशु की मृत्यु ने कुछ ऐसा पूरा किया जो उस पुराने नियम और उन पुराने बलिदानों से कभी पूरा नहीं हो सका। श्लोक 12 में कहा गया है, लेकिन जब मसीह ने पापों के लिए हमेशा के लिए एक ही बलिदान चढ़ाया, तो वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया, उस समय से लेकर तब तक प्रतीक्षा कर रहा था जब तक कि उसके शत्रु उसके पैरों के नीचे की चौकी न बन जाएँ। इसलिए, यीशु की मृत्यु के द्वारा राज्य के वादों की शुरुआत और उद्घाटन किया गया है।

और यीशु, अपनी मृत्यु और फिर अपने पुनरुत्थान और फिर अपने स्वर्गारोहण के द्वारा, जहाँ उसने पिता के दाहिने हाथ पर अपना स्थान ग्रहण किया है, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर शासन कर रहा है। क्रूस पर हमारे लिए किए गए सिद्ध कार्य के कारण उसने अपने राज्य शासन के एक नए पहलू में प्रवेश किया है। यीशु के कार्य के परिणामस्वरूप परमेश्वर के राज्य का एक नया पहलू सामने आया है।

तो, बाइबल कुछ अलग तरीकों से परमेश्वर के राज्य के बारे में बात कर सकती है। यह इस तथ्य की बात कर सकता है कि परमेश्वर का राज्य अनन्त है। वह एक संप्रभु राजा है।

वह जो कुछ भी है वही करता है, और यह संसार के अस्तित्व में आने से भी पहले से ही सत्य रहा है। यह हमेशा से रहा है. यह हमेशा रहेगा.

यह वर्तमान में है. लेकिन बाइबल ईश्वर के राज्य के बारे में भी कुछ ऐसा बोल सकती है जो नया है, कुछ ऐसा है जो युगांतकारी है, और ईश्वर के युग का उद्घाटन और अपने राज्य शासन को एक नए तरीके से शुरू करना यीशु की मृत्यु, दफन, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के माध्यम से पूरा किया गया था। और फिर वह कहता है, "...क्योंकि उस ने एक ही भेंट के द्वारा उन लोगों को सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है जो पवित्र किए जाते हैं।" और पवित्र आत्मा भी हमें गवाही देकर कहता है, कि जो वाचा मैं इन दिनों के बाद उन से बान्धूंगा वह यही है।

और फिर, इब्रानियों अध्याय 10 हमें यिर्मयाह 31, छंद 31 से 34 का एक लंबा और लंबा उद्धरण देता है। इसलिए, यिर्मयाह की नई वाचा का वादा सिर्फ यिर्मयाह की पुस्तक के धर्मशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण नहीं है। यह केवल पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है।

यह एक महत्वपूर्ण अनुच्छेद है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि यीशु ने अपनी मृत्यु के माध्यम से हमारे लिए क्या हासिल किया। यह सक्षमता, यह सशक्तीकरण, यह परिवर्तन जो नई वाचा ने लाया है वह कुछ ऐसा है जिसे हम पहले से ही यीशु में अनुभव कर रहे हैं। इब्रानियों के लेखक का तर्क यह है कि इब्रानियों को ऐसे लोगों के समूह के लिए लिखा गया था जो अपने पुराने यहूदी तरीकों पर वापस जाने, बलिदानों पर वापस जाने, मोज़ेक कानून पर वापस जाने, सांसारिक मंदिर पर वापस जाने, इन सभी चीजों के बारे में सोच रहे थे। जो पुरानी वाचा से जुड़े थे।

और इब्रानियों का लेखक जो कह रहा है वह यह है कि, जब आप पहले से ही नई वाचा के युगांत संबंधी आशीर्वाद का अनुभव कर रहे हैं तो आप पुरानी वाचा पर वापस क्यों जाना चाहेंगे? आप पशु बलि की ओर क्यों लौटना चाहते हैं जबकि आपके पास यीशु का सशक्त, सिद्ध बलिदान है जिसने इस नई वाचा को प्रभाव में लाया है? आप पुरानी वाचा और मोज़ेक कानून और उसके द्वारा लाई गई हार और मृत्यु पर वापस क्यों जाना चाहते हैं, जबकि हमारे पास ऐसा जीवन है जहां भगवान ने हमारे दिलों पर अपना कानून लिखा है, और हम उसके लिए जी सकते हैं? तो, यिर्मयाह 31 के उद्धरण इब्रानियों की पुस्तक के तर्क के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, यही कारण है कि यीशु हमारे लिए इतने महत्वपूर्ण हैं। यही कारण है कि हम पुरानी वाचा पर वापस नहीं जाना चाहते। यीशु एक आदर्श महायाजक हैं जो आमूल-चूल क्षमा, सशक्तीकरण और सक्षमता का आशीर्वाद लेकर आए हैं और ऐसा कोई कारण नहीं है कि हम कभी वहां वापस जाना चाहें।

इसलिए, हम नए करार के इन आशीर्वादों के बारे में सोचते हैं जिन्हें हम अनुभव कर रहे हैं। इस तरह परमेश्वर ने हमारे जीवन को बदल दिया है। जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं और लोगों के साथ मसीह को साझा करते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर लोगों के जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन लाता है, तो यह नए करार की वास्तविकता है।

यही वह शक्ति है जो यीशु के पास जीवन बदलने के लिए है क्योंकि वह ठीक वही लागू कर रहा है जिसका यिर्मयाह ने वादा किया था। इसलिए, नए नियम के धर्मशास्त्र में यिर्मयाह के नए करार के वादे और यीशु की मृत्यु के माध्यम से उस करार की आशीषों की प्राप्ति, कार्यान्वयन या उद्घाटन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। पहला चरण निर्वासन से उनकी वापसी थी।

दूसरे चरण में, यीशु राज्य की आशीषों, पुनर्स्थापना की आशीषों की घोषणा करने के लिए आता है, और वह अपने पूर्ण बलिदान और अपनी पूर्ण मृत्यु के माध्यम से इसे लाता है। जैसा कि हम इसके बारे में सोच रहे हैं, यीशु, यिर्मयाह और क्रूस के बीच एक और संबंध है जो मुझे बिल्कुल आकर्षक लगता है और जिसके बारे में मैं बस कुछ मिनटों के लिए बात करना चाहूंगा। अब, ऐसा करने के लिए, यीशु, यिर्मयाह और क्रूस के बीच इस और संबंध को देखने में हमारी मदद करने के लिए, हमें इसमें और चर्चा में यशायाह की पुस्तक को लाना होगा।

यशायाह की पुस्तक प्रभु के एक सेवक के बारे में बात करती है, और वह प्रभु के एक व्यक्तिगत सेवक के बारे में बात करता है जिसका मिशन इसराइल को प्रभु के राष्ट्रीय सेवक के रूप में बचाना और पुनर्स्थापित करना होगा। यशायाह के धर्मशास्त्र में, परमेश्वर ने राष्ट्रों के सामने अपनी महिमा का प्रचार करने और घोषणा करने के लिए इस्राएल को अपना सेवक राष्ट्र बनाया था,

लेकिन वे परमेश्वर के सेवक के रूप में अपने मिशन में विफल रहे थे। यशायाह अध्याय 42 में कहता है, मेरी प्रजा इस्राएल, वे अन्धे और बहरे सेवक हैं।

उन्हें अन्य राष्ट्रों को ईश्वर की ओर ले जाना था। वे ईश्वर तक पहुंचने का अपना रास्ता भी नहीं खोज सके। कानून के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के माध्यम से राष्ट्रों को ईश्वर को प्रतिबिंबित करने के बजाय, वे अवज्ञाकारी बन गये।

यशायाह के धर्मशास्त्र में होना चाहिए, राष्ट्रीय सेवक की विफलता के लिए एक व्यक्तिगत सेवक की आवश्यकता होती है जो ईश्वर और इज़राइल के बीच वाचा संबंध को बहाल करेगा। इस व्यक्तिगत सेवक पर यशायाह की पुस्तक में सेवक गीत कहलाने वाली श्रृंखला पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वे सेवक गीत अध्याय 42, अध्याय 49, अध्याय 50, और अध्याय 53 में पाए जाते हैं।

ईसाई होने के नाते, हम सभी आम तौर पर यशायाह 53 में पीड़ित सेवक के प्रसंग से परिचित हैं। यह व्यक्तिगत सेवक अपने मिशन को कैसे पूरा करेगा? वह राष्ट्र सेवक को कैसे बहाल करेंगे? वह उनकी क्षमा कैसे लाएगा और उनकी पाप समस्या से कैसे निपटेगा? खैर, अंततः, अध्याय 53 क्या कहता है कि यह व्यक्तिगत सेवक, उस मिशन को पूरा करने के लिए जो भगवान ने उसे लोगों को बहाल करने के लिए दिया था, मरना होगा, और उसे लोगों के लिए पाप बलि के रूप में अपना जीवन अर्पित करना होगा। परमेश्वर उसे कुचलने और उसे इस पीड़ा से गुज़रने में प्रसन्न था ताकि वह इस्राएल के लोगों का उद्धार कर सके।

यशायाह 53:6 कहता है, हम सब इस्राएल के लोग, भटक गए थे और हम सब भेड़ों की तरह अपने मार्ग पर चले गए थे, लेकिन प्रभु ने हम सब के अधर्म का बोझ उस पर डाल दिया। और जब यह धर्मी सेवक जो किसी भी गलत काम के लिए पूरी तरह से निर्दोष है, इस्राएल के लोगों के लिए खुद को पेश करता है, तो परमेश्वर उसे लोगों के लिए एक पापबलि के रूप में स्वीकार करता है और उसकी मृत्यु अंततः राष्ट्रीय सेवक की बहाली लाती है। ठीक है।

अब, आप शायद कह रहे होंगे, मुझे लगा कि हम यिर्मयाह और नई वाचा के बारे में बात कर रहे थे। और हम यहाँ यशायाह और पीड़ित सेवक के साथ क्यों भ्रमित हो गए? खैर, बस कुछ और बातें। जब हम यशायाह की पुस्तक में सेवक के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, सवाल उठता है: अच्छा, यह सेवक कौन है? आप जानते हैं, हम उसे कैसे जानते हैं? हम उसे कैसे पहचानते हैं? ईसाई होने के नाते, हम तुरंत सोचते हैं कि पीड़ित सेवक यीशु है।

यशायाह 53 क्रूस के बारे में एक भविष्यवाणी है। प्रेरितों के काम अध्याय 8 में, जब इथियोपियाई सैनिक उस अंश को पढ़ता है, और फिलिप उसे समझाता है, तो वह कहता है, मैं तुम्हें बताता हूँ, यह यीशु में इस तरह पूरा हुआ है। हम समझते हैं कि यीशु पीड़ित सेवक है।

लेकिन जब आप यशायाह की किताब में वापस जाते हैं और उस भविष्यवाणी के संदर्भ में इसे देखते हैं, तो उस सेवक की पहचान वास्तव में स्पष्ट नहीं है। यह कुछ हद तक रहस्यमय और छायादार है। हम उसे ऐसे देख सकते हैं जैसे कि हम किसी सॉफ्ट कैमरा लेंस से देख रहे हों, और

हम छाया में छाया देख सकते हैं, लेकिन इस आकृति की सटीक पहचान यशायाह की किताब से ही स्पष्ट नहीं है।

और अधिनियमों के अध्याय 8 में इथियोपियाई खोजे को याद करें, जब वह इस अंश को पढ़ रहा था, तो उसने पूछा, यह किसके बारे में बात कर रहा है? क्या यह यशायाह के बारे में है? क्या यह किसी और के बारे में है? और जब मैं यशायाह को पढ़ता हूँ, तो यह सवाल भी उठता है। किसी ने कहा है कि यशायाह में पीड़ित सेवक का जिस तरह से वर्णन किया गया है, वह एक नए मूसा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और वह भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा की विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करता है। अंततः, यह यीशु में पूरा होने जा रहा है।

लेकिन जैसा कि यशायाह में इस व्यक्ति का वर्णन किया गया है, एक व्यक्ति ने इसे इस तरह से वर्णित किया है, प्रभु इस व्यक्ति को प्रस्तुत करता है जो आकर इस्राएल को बचाएगा। और एक अर्थ में, जैसा कि वह उसका वर्णन कर रहा है, वह एक खुला कार्य विवरण छोड़ देता है। यशायाह के दूसरे भाग में लगभग एक मदद-चाहने वाला संकेत लटका हुआ है।

यह कौन आकृति है जो नौकर बनने जा रही है? यह नया मूसा कौन बनने जा रहा है जो लोगों को पुनर्स्थापित करता है, भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा की भूमिका निभाता है, और इस नए पलायन और मुक्ति और बहाली को लाता है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बात की थी? खैर, जैसे ही व्यक्तिगत नौकर का यह पूरा विचार काम करना शुरू करता है, जैसे ही यह खुला नौकरी विवरण वहां रखा जाता है, मदद चाहिए, इज़राइल को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है; पुराने नियम में, ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे विभिन्न व्यक्ति हैं जो इस भूमिका को निभाते हैं। कुछ मायनों में, भविष्यवक्ता यशायाह स्वयं एक सेवक जैसा व्यक्ति है। और वह भविष्यवक्ता है जो घोषणा करता है, हे प्रभु, परमेश्वर की कृपा का समय आ रहा है, कैदियों की रिहाई।

यशायाह, कुछ अर्थों में, एक नौकर जैसा व्यक्ति है। लेकिन जैसे ही हम यिर्मयाह की पुस्तक पर आते हैं, हम अंततः यिर्मयाह पर वापस आ जाते हैं। यहीं वह जगह है जहां मैं जा रहा था। यिर्मयाह, कई मायनों में, एक भविष्यवक्ता के रूप में, जब वह अपने भविष्यसूचक आदेश और ईश्वर द्वारा बुलाए गए कार्य को पूरा करता है, तो वह हमारे लिए बहुत करीब से प्रभु के सेवक जैसा दिखता है जिसका वर्णन किया गया है, यह व्यक्तिगत सेवक जो अपने मिशन की पूर्ति में कष्ट उठाता है।

यशायाह 42, 49, 50, और 53 में सेवक गीत याद रखें। यशायाह 50 छंद चार से नौ में सेवक गीत में, यह हमें बताता है कि व्यक्तिगत सेवक भगवान के प्रति आज्ञाकारी होने वाला है। वह अपने आह्वान के प्रति वफादार रहेगा, जो तुरंत उसके और राष्ट्र के बीच एक सीधा अंतर प्रदान करता है।

वह पीटे जाने के लिए अपनी पीठ थपथपाएगा और उसे शर्मिंदा किया जाएगा और फिर दोषमुक्त कर दिया जाएगा। तो, हमारे पास एक भविष्यवक्ता है जिसे ईश्वर ने बुलाया है, वह अपने मिशन को पूरा कर रहा है, उसकी पीठ थपथपाई जाती है, उसे शर्मिंदा किया जाता है, और फिर ईश्वर अंततः उसे सही ठहराता है। खैर, हम लगभग यिर्मयाह अध्याय 20 की गूँज सुनते हैं।

यिर्मयाह बेबीलोन के प्रति समर्पण की आवश्यकता का संदेश देता है। वह लोगों को उनकी वाचा की बेवफाई और उनके द्वारा किये गये पापों की याद दिलाता है। और यह हमें यिर्मयाह 20 में बताता है कि उसके कारण, उसे गिरफ्तार कर लिया गया है, और पशेर नाम का एक पुजारी यिर्मयाह को पीटता है और उसे जेल में डाल देता है।

ऐसा लगता है, आप जानते हैं, इस खुले नौकरी विवरण का उत्तर कौन देगा? खैर, यिर्मयाह निश्चित रूप से अब तक ऐसा कर चुका है। यशायाह 53, पीड़ित सेवक के बारे में उस महान मार्ग में और एक अद्भुत पुराने नियम का मार्ग जो हमें याद दिलाता है कि यीशु हमारे लिए क्या करेंगे। यहाँ नौकर का वर्णन है, यशायाह 53, छंद सात और आठ।

उस पर अन्धेर किया गया, और उसे कष्ट दिया गया, तौभी उस ने अपना मुंह न खोला। जैसा मेम्रा वध के लिये ले जाया जाता है, वा भेड़ी जो ऊन कतरने से पहिले चुप रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। ठीक है, अगर यह पीड़ित नौकर की खुली नौकरी का विवरण है, अगर मैं इसे पढ़ रहा होता, तो यह ऐसी नौकरी नहीं होती जिसके लिए मैं आवेदन करना चाहता।

कई मायनों में, जैसा कि परमेश्वर ने यिर्मयाह को उसका बुलावा दिया और यिर्मयाह को एहसास हुआ कि उस बुलावे में क्या-क्या शामिल था, यह एक ऐसा कार्य विवरण था जिसके लिए वह पूरी तरह से तैयार नहीं था। लेकिन यहाँ पीड़ित सेवक का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली का इस्तेमाल यिर्मयाह में उस पीड़ा का वर्णन करने के लिए किया जाएगा जिसका इस्तेमाल यहाँ यशायाह में यिर्मयाह की पीड़ा का वर्णन करने के लिए किया जाएगा। ध्यान दें कि वहाँ लिखा है, उसे वध के लिए एक मेमने की तरह ले जाया गया, और वह जीवितों की भूमि से अलग कर दिया गया।

यिर्मयाह अध्याय 11, श्लोक 19 में, जब यिर्मयाह अपने विलापों में से एक और प्रभु के सामने अपने एक अंगीकार की प्रार्थना कर रहा है, तो वह अपने बुलावे और अपने द्वारा सामना किए गए सभी दुखों और दुर्व्यवहार के बारे में बात कर रहा है। इस अंश में, वह इस तथ्य के बारे में बात कर रहा है कि उसके अपने गृहनगर अनातोत के लोग उसे मार डालना चाहते हैं। और यिर्मयाह खुद को इस तरह से वर्णित करता है।

वह कहता है कि मैं वध के लिए ले जाए गए एक कोमल मेमने की तरह था। मैं न जानता था, कि उन्होंने मेरे ही विरुद्ध युक्ति निकाली, कि हम उस वृक्ष को फल समेत नाश करें, और उसे जीवितों के देश में से नाश करें। तो, मेमने को वध के लिए ले जाने का विचार, जीवित भूमि से काट दिया जाना, वह शब्दावली जो यशायाह 53 में नौकर के संदर्भ में उपयोग की जाती है, यिर्मयाह 11 में यिर्मयाह के संदर्भ में उपयोग की जाती है।

अब हम उन महत्वपूर्ण मुद्दों पर नहीं जा रहे हैं कि कौन सा पाठ पहले आया और यशायाह की तारीख और वह सब। मैं बस यह चाहता हूँ कि हम इसे समझें: इस खुले नौकरी विवरण में जो एक पीड़ित नौकर के बारे में दिया गया है जो अंततः अपने लोगों को बहाल करने जा रहा है, यिर्मयाह, कई मायनों में, उस भूमिका को पूरा करता प्रतीत होता है। लेकिन हम जानते हैं, और

हम समझते हैं, कि यिर्मयाह अंततः वह नहीं है जो भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा की गई बहाली को लाने वाला है।

यिर्मयाह निश्चित रूप से नौकरी विवरण का उत्तर देता है। वह उस बुलाहट के प्रति वफादार है जो परमेश्वर ने उसे दिया है। और नौकर की तरह अपनी पीठ पीटने के लिए देता है।

वह शर्मिंदा है, उसे सताया गया है, उसका विरोध किया गया है, उसे कष्ट सहना पड़ा है। एक मेमने की तरह, उसने नेतृत्व किया है। परन्तु इस सेवक का अंतिम कार्य यिर्मयाह द्वारा पूरा नहीं किया गया।

यिर्मयाह के बाद कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो उत्तर दे और उस कार्य विवरण को बहुत बेहतर तरीके से पूरा करे। यिर्मयाह को उत्पीड़न सहना पड़ा। और काव्यात्मक रूप से, वह एक मेमने की तरह वध के लिए ले जाया गया है, और उसके दुश्मनों का इरादा उसे मार डालना और जीवित भूमि से काट देना है।

यीशु उस कार्य विवरण का हर तरह से उत्तर देते हैं। यिर्मयाह के बारे में काव्यात्मक रूप से जो सच था वह वास्तव में और वस्तुतः यीशु के बारे में सच है। वह वह मेमना है जिसके कारण वध हुआ है।

और जिस प्रकार यिर्मयाह कभी नहीं कर सका क्योंकि यिर्मयाह स्वयं एक पापी इस्राएली है, यिर्मयाह, प्रभु, उस पापबलि और प्रायश्चित्त को प्रदान करता है। वह पापरहित है जिस पर लोगों के पाप डाल दिए जाते हैं। वही वह है जिसे परमेश्वर कुचल देता है, और वही वह है जो पापबलि बनता है ताकि वह लोगों को पुनर्स्थापित कर सके।

और वह ऐसा कर सकता है क्योंकि वह हर तरह से पापरहित है। यिर्मयाह प्रभु का सेवक था, छोटा सा, जो हमारे लिए परम पीड़ित सेवक की आशा करता है और उसकी कल्पना करता है। लेकिन यीशु एक अधिक परिपूर्ण पीड़ा सहने वाले सेवक थे।

यशायाह 53:7 कहता है कि परम पीड़ित सेवक के रूप में, इस्राएल को पुनर्स्थापित करने वाले इस व्यक्ति ने अपना मुंह नहीं खोला और अपनी पीड़ा के बारे में शिकायत नहीं की। खैर, जब मुझे यिर्मयाह अध्याय 11 से 20 में यिर्मयाह की स्वीकारोक्ति याद आती है, तो यिर्मयाह ने निश्चित रूप से कभी-कभी अपना मुंह खोला। और हमने देखा, मुझे लगता है, ऐसा करने में वह धर्मी था, लेकिन यशायाह 53 जो अपेक्षा कर रहा है, वह उसे पूरी तरह से पूरा नहीं करता है।

यशायाह 53, 12 कहता है कि पीड़ित सेवक अंततः कई लोगों के लिए हस्तक्षेप करेगा। और इसके परिणामस्वरूप, वह ऐसा व्यक्ति बनने जा रहा है, जो अपनी मृत्यु के द्वारा लोगों को परमेश्वर के पास वापस लाएगा। जैसा कि हमने इब्रानियों की पुस्तक में नई वाचा और यीशु की मृत्यु के बारे में देखा है, वह कई लोगों के लिए प्रभावी रूप से मध्यस्थता करेगा।

खैर, याद रखें कि भगवान ने यिर्मयाह से क्या कहा था, यिर्मयाह अध्याय 7, श्लोक 16, 11:14, 14:11, 15:1, इन लोगों के लिए मध्यस्थता मत करो, उनके लिए प्रार्थना मत करो। तो, यिर्मयाह,

उस पीड़ा और विरोध से जिसका उसे सामना करना पड़ता है और वास्तव में आशा के संदेश से जो वह लोगों को देता है, पीड़ित सेवक इज़राइल को ठीक करने जा रहा है। उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए।

यिर्मयाह सांत्वना की पुस्तक में घोषणा करने जा रहा है कि उन लोगों के लिए उपचार और दवा होने जा रही है जिनके लिए कोई उपचार नहीं था। लेकिन यिर्मयाह इसे पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकता। वह एक पुनर्स्थापना का वादा कर रहा है, जो उसके दृष्टिकोण से, अभी भी भविष्य है क्योंकि उसका जीवन केवल पूर्ण सेवक और उसके द्वारा किए जाने वाले पूर्ण बलिदान की आशा करता है।

और जब वह बलिदान आता है, तो नई वाचा का आशीर्वाद वास्तविकता बन सकता है। और यीशु ने हमारे लिए जो किया है उसके कारण हम यही अनुभव करते हैं। और जैसे ही हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं और जैसे ही हम देखते हैं कि लोगों के जीवन में बदलाव आया है, जैसा कि हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो नशे की लत से जूझ रहे हैं या ऐसे लोग जो यौन अभिविन्यास या यौन पाप से जूझ रहे हैं, चाहे वह विषमलैंगिक हो या समलैंगिक, जैसा कि हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो संघर्ष से निपटते हैं शराब या उनकी शादी में समस्याएँ या लालच या स्वार्थ, जब हम उनके जीवन को बदलते हुए देखते हैं, तो हमें याद आता है कि भगवान अपने लोगों पर अपने दिल का कानून कैसे लिखते हैं।

जैसा कि हम देखते हैं कि हमारे जीवन में परिवर्तन आ रहा है और जिस तरह से भगवान ने मुझे बदल दिया है और मुझे बदलना जारी रखा है, मैं 40 वर्षों से ईसाई हूँ, और ऐसे कई अन्य तरीके हैं जिनमें मुझे बदलने की जरूरत है, लेकिन नई वाचा की शक्ति वास्तविक है क्योंकि सिद्ध सेवक ने वह बलिदान दिया है जो लोगों को परमेश्वर के पास वापस लाता है। यिर्मयाह ने जिस नई वाचा का वादा किया था उसे प्रभावित करने के लिए जिस मृत्यु की आवश्यकता थी वह पहले ही हो चुकी है। और नए नियम में, जैसा कि हम इस सब को देखते हैं, शायद मंत्रालय की सक्षमता या सशक्तिकरण के बारे में मेरा पसंदीदा मार्ग यिर्मयाह के नई वाचा के वादे से संबंधित है।

यह अंश 2 कुरिन्थियों अध्याय 2 में पाया जाता है। एक प्रेरित और एक मिशनरी के रूप में पॉल एक सवाल उठाता है कि मुझे लगता है कि अगर आप एक पादरी, एक शिक्षक, एक ईसाई कार्यकर्ता या यहाँ तक कि एक आस्तिक हैं, जैसा कि हम अपने जीवन जीने के बारे में सोचते हैं, तो यह एक ऐसा सवाल है जो हर बार दिमाग में आना चाहिए। पॉल कहते हैं, जब मैं सुसमाचार प्रचार करने की अविश्वसनीय जिम्मेदारी के बारे में सोचता हूँ, जब मैं मंत्रालय और संदेश और ईश्वर द्वारा मुझे दिए गए बुलावे के भयानक अनन्त जीवन और मृत्यु के निहितार्थों के बारे में सोचता हूँ। भविष्यवक्ताओं को पहरेदार कहा जाना और उसकी भयानक जिम्मेदारी को याद रखें।

पौलुस को भी परमेश्वर के समक्ष उसी प्रकार का दायित्व, उसी प्रकार की जिम्मेदारी का अहसास होता है, जब वह एक प्रेरित के रूप में अपनी सेवकाई के बारे में सोचता है। और वह यह प्रश्न उठाता है। वह कहता है, इन बातों के लिए कौन संभवतः पर्याप्त हो सकता है? जब मैं एक मिशनरी के रूप में, एक प्रेरित के रूप में इस सुसमाचार का प्रचार करने की अपनी जिम्मेदारी

के बारे में सोचता हूँ, और इस सुसमाचार में अनन्त जीवन और मृत्यु के निहितार्थ हैं, तो इन बातों के लिए कौन पर्याप्त है? कौन संभवतः, अपने आप में, इस आदेश को पूरा कर सकता है या लोगों के जीवन में वे परिवर्तन ला सकता है जो परमेश्वर लाना चाहता है? और उस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर यह है कि हममें से कोई भी अपने आप में इन बातों के लिए पर्याप्त नहीं है।

लेकिन यहाँ नई वाचा का अविश्वसनीय वादा यह है कि जैसे-जैसे नई वाचा के वादे और आशीर्वाद हमारे जीवन में काम करना शुरू करते हैं और उन लोगों के जीवन में काम करना शुरू करते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं, परमेश्वर ही वह है जो हमें पर्याप्त बनाता है। 2 कुरिन्थियों 3 आयत 4-6 में पौलुस आगे कहता है कि हमारी पर्याप्तता परमेश्वर से आती है। यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा प्रदान की जाने वाली पर्याप्तता उन वादों से जुड़ी है जो यिर्मयाह ने यिर्मयाह अध्याय 31 में इस्राएल और यहूदा के लोगों से किए थे।

पॉल ने उन लोगों के जीवन में नई वाचा की शक्ति के बारे में बात की, जिनकी उसने सेवा की है और कुरिन्थियों को याद दिलाया कि नई वाचा ने उनके जीवन में क्या किया है। और हम उन सभी समस्याओं और मुद्दों के बारे में सोचते हैं जो कुरिन्थियन चर्च के साथ थे। पॉल अभी भी उनके जीवन को देख सकता था और कह सकता था, लेकिन आप जानते हैं, मैं सुसमाचार की परिवर्तनकारी शक्ति देखता हूँ।

मैं आपके जीवन में नई वाचा के परिवर्तनकारी प्रभाव को देखता हूँ। और यहाँ वह क्या कहता है: क्या हम आपके सामने खुद को प्रस्तुत करना शुरू कर रहे हैं? यह अध्याय तीन की शुरुआत है, या हमें, जैसा कि कुछ लोगों को होता है, आपके लिए या आपके लिए अनुशंसा पत्रों की आवश्यकता है? कोरिन्थियन चर्च में कई लोगों द्वारा पॉल की सेवकाई को चुनौती दी जा रही थी। और वह कहता है, ठीक है, चलो मेरी साख के बारे में सोचते हैं।

क्या मुझे आपको बाहरी पत्र और तीन संदर्भ पत्र देने की ज़रूरत है जो आपको दिखाएँ कि मैं यीशु का एक वैध प्रेरित हूँ? वह कहता है, इस बारे में सोचो। वह कहता है कि हमें इस तरह के अनुशंसा पत्रों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि, पद दो में, आप स्वयं ही हमारे अनुशंसा पत्र हैं। आप जानते हैं, पौलुस को अपनी सेवकाई को मान्य करने के लिए किस संदर्भ पत्र की ज़रूरत है? उन लोगों के बदले हुए जीवन जो उसकी सेवकाई के ज़रिए सुसमाचार की सुनवाई के अंतर्गत आए हैं।

और वह कहता है कि आप हमारे दिलों पर लिखे गए हमारे सिफ़ारिशी पत्र हैं जिसे सभी लोग जानेंगे और पढ़ेंगे। और मैं भगवान के वादे की गूँज सुनने से खुद को नहीं रोक सकता कि वह अपने लोगों पर हृदय का कानून लिखने जा रहा था। लेकिन इस अंश में, छवि को थोड़ा सा बदलते हुए और अपने जीवन में आए परिवर्तन के बारे में सोचते हुए, पॉल कहते हैं, आप स्वयं हमारे दिलों पर लिखे गए हैं।

नई वाचा और भगवान ने मेरे जीवन में जो किया है, उसने मुझे आपसे इस तरह प्यार करने में सक्षम बनाया है। और मैं आपके जीवन में भी नई वाचा का प्रभाव देखता हूँ। वह उसी कल्पना से

निपटता रहता है, और वह कहता है, आप दिखाते हैं कि आप हमारे द्वारा दिया गया मसीह का एक पत्र हैं, जो स्याही से नहीं, बल्कि जीवित ईश्वर की आत्मा से लिखा गया है।

आपके जीवन में जो परिवर्तन आया है वह आत्मा की शक्ति के माध्यम से परिलक्षित होता है। और यह पत्र, यह प्रशंसा पत्र जो आपके जीवन पर आधारित है, पवित्र आत्मा के कार्य करने की शक्ति को दर्शाता है जिसका वादा नई वाचा द्वारा किया गया था। और यह हमारे दिलों पर लिखा गया है क्योंकि नई वाचा ने हमें भी बदल दिया है।

और इसलिए, नई वाचा और राज्य के वादे का एक अभी और दूसरा पहलू है जो यिर्मयाह ने हमें दिया था। चरण एक, याद रखें, निर्वासन से वापसी थी। चरण दो यीशु के प्रथम आगमन के द्वारा लाया जाता है और मसीह की मृत्यु से प्रभावित होता है।

यीशु में विश्वासियों के रूप में, हम अब उन आशीर्वादों और लाभों का अनुभव कर रहे हैं। कोई भी दो नई वाचाएँ नहीं हैं: एक नई वाचा जिसे परमेश्वर ने आज चर्च के साथ बनाया है और एक नई वाचा जिसे परमेश्वर भविष्य में इस्राएल के साथ बनाने जा रहा है।

एक नई वाचा है और हम अभी उसकी आशीषों का अनुभव कर रहे हैं। ठीक है। अब, यह सब एक और व्याख्यात्मक मुद्दा उठाने जा रहा है।

आप जानते हैं, हम इस धर्मशास्त्र के माध्यम से काम करते हुए अधिक समस्याएँ और अधिक प्रश्न उठाते रहते हैं। यीशु के अनुयायियों द्वारा नई वाचा का वर्तमान आनंद मेरे लिए एक दिलचस्प प्रश्न उठाता है। मैं यिर्मयाह 31, आयत 31 पर वापस जा रहा हूँ।

मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा। नई वाचा का प्राप्तकर्ता विशेष रूप से कौन है? यह इस्राएल का घराना और यहूदा का घराना है। तो, सवाल यह है कि, यहाँ मेरा मुद्दा है, मेरा सवाल है।

अगर हम यहूदी नहीं हैं और मैं यहूदी नहीं हूँ, मैं इस्राएल के घराने या यहूदा के घराने से संबंधित नहीं हूँ, तो हम परमेश्वर द्वारा इस्राएल से किए गए वादे के आशीर्वाद को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? ठीक है। नई वाचा का वादा, इस्राएल का घराना, यहूदा का घराना। क्या यह सिर्फ इस्राएल के लिए है? मुझे लगता है कि हमें समझना होगा, और हम पुराने नियम से नए नियम की ओर आगे बढ़ चुके हैं।

मुझे लगता है कि अब हमें पीछे हटकर यिर्मयाह से पुराने नियम के शेष इतिहास और परमेश्वर के संपूर्ण वाचा कार्यक्रम की ओर जाना चाहिए। परमेश्वर नए नियम में जो कर रहा है, वह अंततः पुराने नियम के उद्धार इतिहास का हिस्सा रहे अन्य सभी वाचाओं में परमेश्वर द्वारा किए गए वादों की पूर्ति को दर्शाता है। यिर्मयाह की पुस्तक और अन्य भविष्यवाणियों में परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा के लिए जो नई वाचा का वादा किया था, वह उन सभी वाचा वादों से संबंधित है जो परमेश्वर ने इससे पहले इस्राएल के साथ किए थे।

आप देखते हैं कि पुराने नियम में अलग-अलग अनुबंध नहीं हैं, यहां एक अनुबंध है, यह अलग है, यह अपनी बात है। यहाँ एक और वाचा है: भगवान कुछ और करने जा रहे हैं। एक तीसरी वाचा है: भगवान अपनी रणनीति बदलता है।

वास्तव में सभी अनुबंध अंततः एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और वे एक योजना और एक कार्यक्रम का हिस्सा हैं। वे अंततः एक-दूसरे में समा जाते हैं, और अंततः, वे यीशु में समा जाते हैं। और नई वाचा का वादा जो परमेश्वर ने इस्राएल से किया था अंततः उस वाचा पर वापस जाता है जो परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ बनाई थी।

और उस वाचा के वादों को स्मरण रखो जो परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था। उन्होंने कहा, मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें एक भूमि देने जा रहा हूँ, और तुम्हारे माध्यम से पृथ्वी पर सभी राष्ट्र आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। नई वाचा से पहले की इब्राहीम वाचा में परमेश्वर की योजना और परमेश्वर का इरादा यह है कि परमेश्वर इसराइल के लोगों को जो भी आशीर्वाद देगा, वह अंततः पूरी दुनिया और राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद का एक स्रोत और एक साधन बन जाएगा। .

ईश्वर की योजना हमेशा इब्राहीम, इज़राइल को इब्राहीम के वंशजों के रूप में उपयोग करने, लाने और उनके आशीर्वाद का साधन बनने की थी। वे पुजारियों का राज्य बनने जा रहे थे। वे अन्य सभी राष्ट्रों के लिए उन आशीर्वादों की मध्यस्थता करेंगे।

हम आज चर्च के रूप में, यीशु के अनुयायियों के रूप में, अब्राहमिक वाचा के वादों के कारण नई वाचा के आशीर्वाद में शामिल होते हैं। ठीक है, मुझे उसे फिर से दोहराने दो। हम इब्राहीम की वाचा में मौजूद वादों के कारण नई वाचा के आशीर्वाद में शामिल होते हैं।

यदि यीशु इब्राहीम का वंश है, जैसा कि गलाटियन अध्याय 3 कहता है कि वह है, और यदि यीशु ही अंततः वह है जिसके माध्यम से इब्राहीम की वाचा के वादे पूरे होते हैं, तो हम उस वाचा के वादे के माध्यम से नई वाचा के आशीर्वाद और लाभों में आते हैं। यिर्मयाह द्वारा वादा किया गया। इब्राहीम की वाचा कहती है, पृथ्वी की सारी जातियाँ तुझ में धन्य होंगी। वह आशीर्वाद जो विशेष रूप से यिर्मयाह द्वारा वादा की गई नई वाचा के माध्यम से दिया जाता है, उनके पिछले पापों की मौलिक क्षमा और भविष्य के लिए सक्षमता और सशक्तिकरण, अब्राहम के माध्यम से, अब्राहमिक वाचा के माध्यम से, वे वादे उन लोगों को दिए जाते हैं जो यीशु के अनुयायी हैं।

ये सभी वाचाएँ अंततः मसीह में पूरी होती हैं। और जब हम मसीह में होते हैं, तो हम उन लाभों और आशीषों के प्राप्तकर्ता बन जाते हैं। ठीक है।

तो उम्मीद है कि इससे उस मुद्दे का जवाब देने में मदद मिलेगी। हम गैर-यहूदी होने के नाते, यिर्मयाह 31:31 की प्रतिज्ञाओं में कैसे शामिल हो सकते हैं? खैर, यह अब्राहमिक वाचा के माध्यम से है। लेकिन इससे हमारे लिए एक और मुद्दा उठता है।

यहाँ मुद्दों और सवालों से निपटना जारी रखें। अब्राहम और इस्राएल का उल्लेख, और पुराने नियम की वाचाएँ, और विशेष रूप से यिर्मयाह 31 में यह कथन कि परमेश्वर इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ यह नई वाचा बना रहा है, हमें याद दिलाता है कि पुनर्स्थापना और

राज्य के वादों के लिए अंततः एक तीसरा चरण है। हमने चरण एक और निर्वासन से वापसी के बारे में बात करने में बहुत समय बिताया।

हमने दूसरे चरण और राज्य की शुरुआत और यीशु के पहले आगमन के माध्यम से वाचा की आशीषों की शुरुआत और कार्यान्वयन और उद्घाटन के बारे में बात की है, और कैसे वे लाभ हमारे जीवन में वास्तविक बनते हैं और मसीह की मृत्यु के माध्यम से हमारे जीवन को बदलते हैं। लेकिन परमेश्वर के राज्य के वादों की पूर्ति के लिए एक तीसरा चरण है जो उद्धार के इतिहास को पूरा करता है और राज्य की सभी आशीषों, सभी युगांतकारी आशीषों को पूरी तरह से प्रभावी बनाता है जिनका वादा परमेश्वर ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से किया था। यीशु के पहले आगमन पर हमारे लिए दूसरा चरण घटित हुआ है।

यह आपके जीवन में व्यक्तिगत रूप से तब वास्तविक हो जाता है जब आप विश्वास करते हैं और विश्वास करते हैं और मसीह ने आपके लिए जो किया है उसे अपनाते हैं। यिर्मयाह और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के इन नई वाचा के राज्य बहाली के वादों की अंतिम परिणति में चरण तीन अंततः यीशु के दूसरे आगमन पर घटित होगा। और मेरा मानना है कि चरण तीन में कई महत्वपूर्ण चीजें शामिल होंगी।

नंबर एक, जैसे ही यीशु शासन करने और शासन करने के लिए आएंगे, परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से स्थापित हो जाएगा। मेरा मतलब है, उसने अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और अपने प्रथम आगमन के संबंध में स्वर्गारोहण के माध्यम से अपने राज्य शासन के एक नए चरण और एक नए पहलू में प्रवेश किया, लेकिन हम अभी भी परमेश्वर के राज्य की पूर्ण अंतिम अभिव्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और यह उसके दूसरे आगमन पर होगा। हम इसके बारे में प्रकाशितवाक्य 19 में पढ़ सकते हैं।

यीशु एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में वापस आता है। वह अपने शत्रुओं का नाश करता है। वह अंतिम न्याय लाता है, और फिर वह शांति का एक राज्य स्थापित करता है जिसका वर्णन हमारे लिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 में किया गया है।

दूसरी बात जो नई वाचा की पुनर्स्थापना प्रतिज्ञाओं के कार्यान्वयन के तीसरे चरण में होने जा रही है, वह यह है कि परमेश्वर का नियम अंततः और पूरी तरह से उसके लोगों के दिलों में लिखा जाएगा। और यहाँ तक कि पाप करने की हमारी क्षमता भी हमसे छीन ली जाएगी। आप देखिए, यीशु की मृत्यु के माध्यम से, हमारे पास यह नई क्षमता है।

परमेश्वर का नियम हमारे हृदय पर लिखा गया है। आत्मा हमारे भीतर डाली गई है, और हमारे पास इच्छा और आंतरिक क्षमता है जो परमेश्वर द्वारा सशक्त की गई है ताकि हम वह जीवन जी सकें जो परमेश्वर चाहता है कि हम जीएँ। 2 पतरस 1 कहता है, हमें वह सब कुछ दिया गया है जो जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक है।

लेकिन रोमियों का सातवाँ अध्याय हमें याद दिलाता है कि हमारे जीवन में एक और नियम काम कर रहा है, और वह है पाप का नियम और हमारे पापी स्वभाव की वास्तविकता, और हम अभी भी उसके साथ जी रहे हैं। और इसीलिए, हमारे पिछले सत्रों में से एक में, हमने इस तथ्य के बारे

में बात की थी कि जॉन गोल्लिंगे कहते हैं, आप जानते हैं, जब आप नए नियम में विश्वासियों के जीवन को देखते हैं, तो कभी-कभी वे पुराने नियम में लोगों के जीवन से बहुत अलग नहीं लगते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अभी भी पाप की समस्या से जूझ रहे हैं और संघर्ष कर रहे हैं।

और यह तब तक रहेगा जब तक कि राज्य अपने पूर्ण प्रकटीकरण में नहीं आ जाता और परमेश्वर हमें पूरी तरह से बदल नहीं देता ताकि हम अमर शरीर में न रहें जिसे पाप से जूझना और संघर्ष करना पड़े। यह भी चरण तीन का हिस्सा है। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ, और मैं जानता हूँ कि वास्तव में बहुत अच्छे बाइबिल विद्वान हैं जो, आप जानते हैं, इससे असहमत होंगे या जिनके पास अन्य विचार या दृष्टिकोण हैं, लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि इस पूर्ति का चरण तीन, परमेश्वर के राज्य का अंतिम प्रकटीकरण, वाचा के वादों की अंतिम पहचान और पूर्ति और प्राप्ति और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा परिकल्पित पुनर्स्थापना का अर्थ परमेश्वर के लोगों, इस्राएल की पुनर्स्थापना भी होगा।

मेरा मानना है कि विशिष्ट वाचा के वादे जो ईश्वर ने इस्राएल के लोगों को दिए हैं और जिन विशिष्ट चीजों और तरीकों से ईश्वर इस्राएल के लोगों में और उनके माध्यम से काम कर रहा है, वे मुक्ति के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, कि वे विशिष्ट वादे जो ईश्वर ने दिए हैं इज़राइल के लोग भी उस अंतिम परिणति में अपनी पूर्णता पाने जा रहे हैं। अब, फिर से, स्पष्ट रूप से चर्च में इस बारे में हमारी अलग-अलग राय है, और अलग-अलग धार्मिक प्रणालियाँ हैं। और यह आध्यात्मिकता की परीक्षा नहीं है, आप इन विशेष मुद्दों के बारे में क्या विश्वास करते हैं, लेकिन हमारे पास कुछ धार्मिक प्रणालियाँ हैं जो हमारे लिए इस बात पर जोर देना चाहती हैं कि भविष्यवक्ताओं के माध्यम से दिए गए पुनर्स्थापन के वादे आध्यात्मिक रूप से पूरे होते हैं और आलंकारिक रूप से चर्च में और उसके माध्यम से पूरे होते हैं।

हमारे पास अन्य धार्मिक प्रणालियाँ हैं जिन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि इज़राइल के लिए राज्य के वादे सचमुच इज़राइल के लोगों और राष्ट्र में पूरे होने जा रहे हैं। और कभी-कभी अलग-अलग डिग्री तक हम उसे कितना कठोर और कितना पूर्ण रूप से कार्यान्वित देखते हैं। तो, हमारे पास ये दो अलग-अलग प्रणालियाँ हैं।

कुछ लोग कहते हैं, आप जानते हैं, जिस राज्य की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने यिर्मयाह और अन्य भविष्यवक्ताओं को दी थी। वे चर्च में आलंकारिक रूप से पूरे होते हैं। अन्य धार्मिक प्रणालियाँ जो कहती हैं, नहीं, वे सचमुच इस्राएल के लोगों के माध्यम से पूरी होने वाली हैं। और मुझे लगता है कि जब मैंने पुराने और नए टेस्टामेंट को एक साथ पढ़ा है तो मेरी समझ यह है कि यह कोई एक या दूसरा वाला प्रश्न नहीं है।

यह केवल यह सवाल नहीं है कि क्या यह चर्च में आलंकारिक और आध्यात्मिक रूप से पूरा होगा या शाब्दिक और वास्तविक तरीके से इज़राइल के लोगों द्वारा पूरा किया जाएगा। मुझे लगता है कि यह दोनों और है। और मुक्ति के इतिहास में यह शामिल है कि, हाँ, परमेश्वर के राज्य के वर्तमान पहलू में, इसके अब के भाग में और यीशु ने अपनी मृत्यु के माध्यम से जो हासिल किया उसके कारण हम नई वाचा का अनुभव कर रहे हैं, हम नई वाचा के आशीर्वाद का अनुभव कर रहे हैं और इज़राइल से किए गए वादे आज चर्च में लाक्षणिक रूप से पूरे हो रहे हैं।

हम नये इजराइल बन गये हैं. फिलिप्पियों अध्याय 3 कहता है, हम ही सच्चे खतना हैं। यीशु द्वारा नियुक्त 12 प्रेरित किसी न किसी रूप में हमारे लिए परमेश्वर के लोगों के लिए एक नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

और परमेश्वर के लोग एक हैं, परमेश्वर के दो लोग नहीं। और वहाँ एक नई वाचा है, दो नई वाचाएँ नहीं। और इसलिए, हम नई वाचा और राज्य के आशीर्वाद को आलंकारिक रूप से अनुभव कर रहे हैं।

लेकिन मेरा मानना है कि परमेश्वर ने इस्राएल से जो वादे किए हैं, वे उद्धार के इतिहास का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा हैं कि परमेश्वर की वाचा की वफ़ादारी की माँग है कि वह इस्राएल के लोगों से किए गए उन वादों को भी पूरा करे। उत्पत्ति अध्याय 12 में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के माध्यम से काम करना शुरू किया। और मेरा मानना है कि उद्धार के इतिहास का इस्राएल-विशिष्ट पहलू अंत तक जारी रहता है।

और इसलिए, मेरा मानना है कि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को भविष्यवक्ता यिर्मयाह के माध्यम से उनकी भूमि के बारे में, उनकी वापसी के बारे में जो पुनर्स्थापना के वादे दिए थे, वे बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे पुराने नियम के संदेश में बहुत अंतर्निहित हैं। कुछ ऐसा है जिसे आप बार-बार सुनते हैं, और वे परमेश्वर द्वारा अपने राज्य को पृथ्वी पर लाने के लिए किए जा रहे कार्य की कहानी के लिए इतने महत्वपूर्ण हैं कि वे केवल चर्च में आध्यात्मिक रूप से पूरे नहीं होते हैं।

वे वादे पूरे होने जा रहे हैं क्योंकि परमेश्वर स्वयं इस्राएल के लोगों की बहाली के लिए काम कर रहे हैं। मैं यिर्मयाह के पास वापस जाना चाहता हूँ और कुछ स्थानों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जहाँ हम यह समझना शुरू करते हैं कि यह विशिष्ट प्रतिबद्धता जो ईश्वर ने इजराइल के लिए की है, यह ईश्वर के मन में कितनी महत्वपूर्ण है, और ये विशिष्ट वाचा के वादे कितने महत्वपूर्ण हैं जो ईश्वर ने किए हैं इजराइल को. वे भविष्यवक्ताओं के संदेश को कितना महत्व देते हैं? और उत्तर हमें यह मिलता है कि इनका बहुत बड़ा महत्व है।

सुनो कि परमेश्वर इस्राएल के बारे में क्या कहता है, यिर्मयाह अध्याय 31, श्लोक 35 से 37। यह प्रभु कहता है, जो दिन में प्रकाश के लिए सूर्य देता है और रात में प्रकाश के लिए चंद्रमा और तारों का निश्चित क्रम देता है, जो समुद्र को उत्तेजित करता है ताकि उसकी लहरें गरजें, सेनाओं का यहोवा उसका नाम हो। यदि यह निश्चित क्रम हट जाता है, तो हम किस निश्चित क्रम की बात कर रहे हैं? वह निश्चित क्रम जो हम हर सुबह देखते हैं जब सूरज निकलता है और फिर जब रात होती है, वह चक्र लगातार दोहराया जाता है।

मैं कभी भी रात में बिस्तर पर नहीं जाता और आश्चर्य करता हूँ, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या सूरज निकलेगा, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वह कल निकलेगा क्योंकि भगवान ने यह व्यवस्था स्थापित की है और यह तय है। वह कहता है, यदि यह नियत रीति मेरे साम्हने से हट जाए, तो इस्राएल का वंश मेरे साम्हने सदा के लिखे जाति न रह जाए। ठीक है, तो भगवान ने एक प्रतिबद्धता बनाई है,

एक अर्थ में, यहाँ एक वाचा का लंगर है जिसके बारे में मेरा मानना है कि भगवान ने हमेशा के लिए खुद को शपथ दिलाई है।

और वह कहता है, मैं इस्राएल के लोगों के प्रति कितना प्रतिबद्ध हूँ? मैंने उनसे जो विशिष्ट वाचा के वादे किए थे, उन्हें पूरा करने के लिए मैं कितना प्रतिबद्ध हूँ? खैर, मैं इसके प्रति उतना ही प्रतिबद्ध हूँ जितना कि मैं हर सुबह उगने वाले सूरज और हर रात निकलने वाले सितारों और चाँद के प्रति हूँ। यह एक तय बात है जिसे पूरा करने की मैंने खुद से शपथ ली है। और इसलिए, मेरा मानना है कि इस्राएल के लिए एक बहाली है जो तीसरे चरण की प्रतीक्षा कर रही है।

सिर्फ इसलिए नहीं कि मेरा मानना है कि हमें भविष्यवक्ताओं को बहुत ज़्यादा शाब्दिक तरीके से पढ़ना और समझना चाहिए और कभी-कभी रूपकों और आकृतियों के साथ अन्याय करना चाहिए, बल्कि इसलिए कि मेरा मानना है कि वाचा संबंधी वादे हैं जो इस बात को रेखांकित करते हैं कि परमेश्वर इसराइल के लिए क्या करने जा रहा है, भविष्यवक्ता क्या कह रहे हैं कि प्रभु इसराइल के लिए क्या करेंगे। और वाचा संबंधी वे वादे प्रभावी रहते हैं। भूमि के वादे के बारे में सोचें और यह इसराइल के लोगों के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

यिर्मयाह अध्याय 32 में, इन पुनर्स्थापना वादों के बीच, यह याद दिलाया गया है कि कितनी भूमि उन पुनर्स्थापना वादों का एक विशिष्ट हिस्सा है। यिर्मयाह अध्याय 32 में यिर्मयाह एक सांकेतिक कार्य करता है, और यह सीधे तौर पर भूमि के अनुबंध संबंधी वादे से संबंधित है। यिर्मयाह को जाने और अपने रिश्तेदार हनामेल की संपत्ति वापस छुड़ाने का निर्देश दिया गया है।

और, आप जानते हैं, वह यहां पुराने नियम की रीति का पालन कर रहा है। जब भी किसी रिश्तेदार को जमीन बेचनी होती थी, तो उसे वापस खरीदना और यह सुनिश्चित करना आपका दायित्व था कि वह परिवार के हाथों में ही रहे। प्रभु नहीं चाहते थे कि परिवार अपनी ज़मीन खो दें।

वह प्रभु की ओर से उनकी विरासत थी। और इसलिए, यिर्मयाह जाता है और वह इसे पूरा करता है और वे शीर्षक कार्यों पर हस्ताक्षर करते हैं। और यह सुनिश्चित करने पर वास्तव में जोर दिया जा रहा है कि यहां एक लिखित दस्तावेज है जो पुष्टि करता है कि यह भूमि यिर्मयाह और उसके परिवार की है।

लेकिन इन सबके पीछे केवल पारिवारिक दायित्व को पूरा करने से कहीं अधिक गहरा महत्व है। यिर्मयाह ने यह संकेत कार्य उस समय किया जब बेबीलोनवासी भूमि लेने के लिए तैयार हो रहे थे। और इसलिए, यिर्मयाह 32 में जो सवाल उठता है वह यह है कि जमीन क्यों खरीदें, यह पैसा क्यों दें और यह निवेश क्यों करें, और इस प्रक्रिया से क्यों गुजरें जहां आप कर्मों की दो प्रतियां लिखते हैं और आप एक को सील कर देते हैं, और आप एक को खुला रखते हैं, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे संरक्षित हैं, आप उन्हें जार में डालते हैं? वह सब क्यों करते हैं? ठीक है, इसका उत्तर यह है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों से एक विशिष्ट वादा किया है कि वह उन्हें उस देश में वापस लाएगा।

और यह उस वाचा का हिस्सा था जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ स्थापित किया था। और मेरा मानना है कि जैसे-जैसे हम नए नियम में आगे बढ़ते हैं और रोमियों के अध्याय 4 की आयत 13

कहती है कि परमेश्वर के लोग पूरी धरती के वारिस बनने जा रहे हैं, हमें पूरी भूमि या पूरी धरती का मालिकाना हक दिया गया है क्योंकि यह सब यीशु का है, इसका हर वर्ग इंच। लेकिन उस वाचा का एक हिस्सा और उद्धार के इतिहास का हिस्सा और जिस तरह से परमेश्वर इसे पूरा करने जा रहा है, उसका एक हिस्सा उन विशिष्ट वाचा वादों को पूरा करना है जो परमेश्वर ने इस्राएल से किए हैं।

और इसलिए मुझे लगता है कि हमारे पास यिर्मयाह की पुस्तक और पुराने नियम में ऐसे सुराग, संकेत और संकेतक हैं जो हमें उस निष्कर्ष तक ले जाते हैं। फिर हमारे पास नए नियम में और साथ ही रोमियों के अध्याय 9 से 11 में एक महत्वपूर्ण लंगर मार्ग है, जहाँ पौलुस परमेश्वर की वाचा संबंधी प्रतिज्ञाओं और इस्राएल के लोगों के प्रति परमेश्वर की वाचा संबंधी प्रतिबद्धता पर विचार करने जा रहा है। यह ध्यान जातीय लोगों पर है।

रोमियों 9 से 11 का ध्यान स्पष्ट रूप से इज़राइल के जातीय लोगों पर है। पॉल कहते हैं, इज़राइल के लिए मेरे दिल की इच्छा और ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें बचाया जाए। वह जातीय यहूदियों के बारे में बात कर रहे हैं।

वह इज़राइल के लोगों के बारे में बात कर रहे हैं। और मेरा मानना है कि इज़राइल शब्द का अर्थ रोमियों 9 से 11 में यही होगा। पॉल ने रोमियों 9 से 11 में जो धर्मशास्त्रीय बिंदु स्थापित किया है वह यह है कि पूरे इतिहास में इज़राइल के अविश्वास ने ईश्वर की वाचा के वादों को अमान्य नहीं किया है।

उनका प्रभाव बना रहता है। पॉल का कहना है कि ईश्वर उन वाचा वादों को पूरा कर रहा है जो उसने इस्राएल से दो विशिष्ट तरीकों से किए हैं। वो वादे पूरे होने वाले हैं।

नंबर एक, यहूदी लोगों के बीच अनुग्रह का एक अवशेष है जो वर्तमान युग में मसीह के पास आ रहे हैं, और वे चर्च का हिस्सा बन गए हैं। और पूरे इज़राइल के इतिहास की तरह, हमेशा विश्वासियों का एक अवशेष रहा है जो परमेश्वर के सच्चे लोगों का हिस्सा थे। वर्तमान युग में यहूदी लोग यीशु को जानने आ रहे हैं।

और परमेश्वर की कृपा के माध्यम से, परमेश्वर अपनी वाचा के वादों को पूरा कर रहा है क्योंकि वे नई वाचा के आशीर्वाद का आनंद लेने के लिए आ रहे हैं। लेकिन पॉल आगे कहते हैं कि इसके अलावा, दूसरा तरीका यह है कि भगवान इसराइल के लिए अपने वाचा के वादों को भविष्य में पूरा करेंगे, राष्ट्रीय अंधकार का यह समय समाप्त होने के बाद और उस समय के संबंध में जब यीशु वापस आने और अंदर आने के लिए तैयार होंगे अंत समय में सभी चीजों की बहाली के संबंध में, परमेश्वर के लोगों का इज़राइल की ओर एक राष्ट्रीय मोड़ होने जा रहा है। और पौलुस ने रोमियों अध्याय 11, पद 26 में यह कहा है, और इस प्रकार, जैसा लिखा है, सारा इस्राएल बचाया जाएगा।

छुड़ानेवाला सिंघोन से आएगा। वह याकूब से अधार्मिकता को दूर कर देगा। और जब मैं उनके पाप दूर कर दूंगा तब उनके साथ मेरी यही वाचा होगी।

इसलिए, प्रभु कहते हैं, लोगों का इस्राएल की ओर मुड़ना तय है। इस्राएल के लोगों को उद्धार दिया जाएगा, जहाँ परमेश्वर इस्राएल की पुनर्स्थापना उन लोगों के लिए करने जा रहा है जो सभी न्यायों और अंत समय में होने वाली चीज़ों से बचे रहेंगे। और हम इस तथ्य के बारे में बहस कर सकते हैं कि क्या इसमें एक राज्य और एक राष्ट्रीय इकाई और भविष्यवक्ताओं द्वारा कल्पना की गई सभी चीज़ें शामिल हैं, या यह केवल यहूदी लोगों के आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर की ओर मुड़ने की बात करता है।

यह वास्तव में महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है, लेकिन याद दिलाना महत्वपूर्ण है, और जो महत्वपूर्ण है, वह यह है कि परमेश्वर अपनी वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। बस एक अंतिम चिंतन, और हम इसे समाप्त करेंगे। यह हमारे लिए क्यों मायने रखता है? हम वास्तव में इन सब को क्या महत्व देते हैं? खैर, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि रोमियों के अध्याय आठ में पौलुस ने हमें विश्वासियों के रूप में क्या कहा है।

वह कहता है कि हमें परमेश्वर ने चुना है। हमें चुना गया है। हमें न्यायोचित ठहराया गया है।

आखिरकार, हम महिमान्वित होंगे। उसने हमें बुलाया है। हम परमेश्वर के लोग हैं।

मसीह यीशु में जो परमेश्वर का प्रेम है, उससे हमें कोई भी अलग नहीं कर सकता। और जब पौलुस इस तथ्य के बारे में बात करता है कि हमें परमेश्वर के प्रेम से कोई भी अलग नहीं कर सकता, तो उसके तुरंत बाद वह अगला मुद्दा जिस पर वह तुरंत बात करने जा रहा है, वह है इस्राएल के प्रति परमेश्वर की शाश्वत प्रतिबद्धता। यीशु के अनुयायी के रूप में मैं कैसे जान सकता हूँ कि मुझे परमेश्वर के प्रेम से कभी कोई अलग नहीं कर सकता? मुझे बस इतना करना है कि इस्राएल के प्रति परमेश्वर की स्थायी प्रतिबद्धता को देखना है।

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने एक नई वाचा का वादा किया था। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्य में एक राज्य का वादा किया था। भूमि पर वापसी होगी।

यरूशलेम के मंदिर का पुनर्निर्माण होगा। एक नया दाऊद होगा। राष्ट्रों का समावेश होगा।

जैसे-जैसे हम नए नियम में उद्धार के इतिहास की कहानी के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, हम समझते हैं कि ये वादे चरणों में पूरे हो रहे हैं। पहला चरण भूमि पर वापसी है। दूसरा चरण यीशु का अपने पहले आगमन पर है जहाँ वह नई वाचा को प्रभावी बनाता है।

तीसरा चरण भविष्य की पुनर्स्थापना है जहाँ हमारा उद्धार पूर्ण हो जाएगा, जहाँ परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आएगा, और इस्राएल के लिए परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञाएँ भी उस पुनर्स्थापना के एक भाग के रूप में पूरी होंगी।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में हैं। यह सत्र 28 है, यिर्मयाह 30-33 से पुनर्स्थापना के चरण।